भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा 21वीं सदी के कौशलों का विकास

19

ऋचा गुप्ता
डॉ. वन्दना कौशिक

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल ध्येय "सा विद्या या विमुक्तये" (विष्णु–पुराण1. 19.41) है, जिसका अर्थ है विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए। मुक्ति वासना की, दुखों की, सांसारिक मोह–माया की और मानसिक विकारों की। इसी श्लोक का अनुसरण करते हुए हमारी प्राचीन ज्ञान प्रणाली ने शिक्षा के उद्देश्यों से जिन कौशल को विकसित किया वह आज की शिक्षा पद्धति में 21वीं सदी के कौशल के रूप में पहचाने जाते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल सूचनाओं के आदान–प्रदान तक सीमित नहीं रही है, बल्कि इसका उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना रहा है। भारतीय ज्ञान का उद्भव वेदों से हुआ है वेद शब्द संस्कृत विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है ज्ञान और ज्ञान वही है, जो मनुष्य को बंधनों से मुक्त करे। यह मुक्ति केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि मानसिक, सामाजिक और नैतिक स्तर पर भी है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने ऐसे कौशलों का विकसित किया, जो वर्तमान समय में 21वीं सदी के कौशलों के रूप में प्रासंगिक हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षा को आत्मचिंतन, विवेक और संतुलित जीवन का आधार माना गया है। यही आधार वर्तमान में जीवन कौशल, समस्या समाधान, तार्किक चिंतन और नेतृत्व क्षमता जैसे आधुनिक शैक्षिक कौशल से मेल खाती है। उपनिषदों के शास्त्रार्थ, संवाद और प्रश्नोत्तर पद्धति से विद्यार्थियों में तर्क शक्ति एवं विश्लेषण क्षमता विकसित होती थी। इस अवधारणा को वर्तमान में तार्किक चिंतन

ऋचा गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, बैंकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
डॉ. वन्दना कौशिक
शिक्षा विभाग, बैंकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
Email: aartichaudhary190@gmail.com
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB355-F26.Ch.19
Book: भारत में नवोन्मेषी शोधः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली और तकनीकी का संगम
Plagiarism Report: 11%

और आलोचनात्मक सोच की आधारशिला मान जा सकता है। वैदिक गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, योग, ललित कला, शतरंज, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद और शिल्प–विद्या ने नवाचारी और व्यावहारिक सोच को जन्म दिया। इन विचारों को आधुनिक समय में रचनात्मक कौशल और समस्या समाधान कौशल का नाम दिया जा सकता है। धर्म, कर्तव्य बोध और लोक कल्याण की भावना से नैतिक मूल्यों का विकास हुआ, जिसे वर्तमान संदर्भ में सहयोग, नेतृत्व कौशल और सामाजिक कौशल के नाम से भी संबोधित किया जा सकता है।

2. भारतीय शिक्षा प्रणाली में 21वीं सदी के कौशल का महत्व और आवश्यकता

21वीं सदी के कौशल से तात्पर्य उन क्षमताओं से है, जो ज्ञान, व्यावसायिक दक्षता, समाज में सक्रिय सहभागिता, संप्रेषण और जीवन कौशल के विकास के लिए आवश्यक है, और ये विद्यार्थियों को इस जटिल प्रतियोगिता वाले समय की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।

वर्तमान युग में विश्व तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। आज शिक्षा के क्षेत्र के साथ –साथ वैश्वीकरण और व्यावसायिक क्षेत्र में भी 21वीं सदी के कौशलों का विशेष महत्व है। कई पारंपरिक कार्य मशीनों द्वारा किए जाने लगे हैं, जिस कारण विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी और कला जैसे क्षेत्रों में कुशल, प्रशिक्षित, लचीले और नवोन्मेषी मानव संसाधन की मांग बढ़ रही है। इसलिए शिक्षा का लक्ष्य केवल जानकारी या सूचना देना नहीं, बल्कि छात्रों को जीवन कौशल, व्यावसायिक निपुणता और आदर्श नागरिक की जिम्मेदारियों के लिए सक्षम बनाना होना चाहिए। 21वीं सदी के कौशलों में आलोचनात्मक सोच, समस्या–समाधान, रचनात्मकता, सहयोग, संचार, तकनीकी साक्षरता और सतत सीखने की क्षमता प्रमुख हैं। बदलती अर्थव्यवस्था में केवल विषयगत ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान की समझ, नई परिवर्तनशील परिस्थितियों में उसका उपयोग, उसे लागू करने की क्षमता और बहुविषयक दृष्टिकोण भी आवश्यक है। बिग डेटा, मशीन लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वचालित तकनीकी ने कार्य–प्रणाली और समाज की संरचना को तेजी से परिवर्तित कर दिया है। ऐसी स्थिति में विषयगत ज्ञान के साथ–साथ 21वीं सदी के कौशलों का आत्मसातीकरण अत्यंत आवश्यक हो गया है, जिससे छात्र भविष्य की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकें।

वर्तमान युग सोशल मीडिया का युग है। इसे डिजिटल युग कहा जाता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म न केवल सूचना के आदान–प्रदान का माध्यम हैं, बल्कि ये संचार, शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक सहभागिता और व्यक्तित्व विकास के भी महत्वपूर्ण उपकरण बन चुके हैं। सोशल मीडिया के इस युग में केवल विषयगत ज्ञान और पारंपरिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसे बहुआयामी कौशलों की आवश्यकता बढ़ गई है, जो व्यक्ति को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम बनाते हों।

आज के इस डिजिटल युग में डिजिटल साक्षरता महत्वपूर्ण हो गई है। सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग, साइबर सुरक्षा, डिजिटल साक्षरता, प्रभावी संचार, और सामाजिक सहभागिता के बिना व्यक्तित्व का विकास अधूरा है। इसलिए जीवन कौशल, निर्णय–क्षमता, सहयोग, तार्किक चिंतन और संवेदनशीलता जैसे गुण का विकास वर्तमान में अति आवश्यक है।

तेजी से बदलते इस प्रौद्योगिकी और संचार के विश्व में आगे बढ़ने, वैश्विक पटल पर विविध संस्कृतियों के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने, नित नवोन्मेषी शोध करने, नई चुनौतियों और अवसरों के लिए सक्षम बनने और पल–पल परिवर्तित होते परिवेश के अनुकूल ढलने आदि के लिए 21वीं सदी के कौशल आवश्यक है। इन कौशल के माध्यम से छात्र अपने व्यावसायिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सांस्कृतिक विकास को बढ़ा सकते हैं और साथ ही अपने देश,समूह, संगठन आदि के विकास में योगदान कर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

3. 21वीं सदी के कौशल प्रकार एवं श्रेणी

21वीं सदी के कौशल वे बारह दक्षताएं हैं, जिनके द्वारा छात्र आज के इस डिजिटल युग में अपने व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन जटिल चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को सक्षम कर सकेंगे।

- आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- रचनात्मकता (Creativity)
- सहयोग (Collaboration)
- संचार (Communication)
- सूचना साक्षरता (Information Literacy)
- मीडिया साक्षरता (Media Literacy)
- प्रौद्योगिकी साक्षरता (Technology Literacy)
- लचीलापन (Flexibility)
- नेतृत्व क्षमता (Leadership)
- पहल करने की क्षमता (Initiative)
- उत्पादकता (Productivity)
- सामाजिक कौशल (Social skills)

21वीं सदी के इन 12 कौशल को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है–

1. सीखने के कौशल (4C)

- आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- रचनात्मकता (Creativity)
- सहयोग (Collaboration)
- संचार (Communication)

2. साक्षरता कौशल (IMT)

- सूचना साक्षरता (Information Literacy)
- मीडिया साक्षरता (Media Literacy)
- प्रौद्योगिकी साक्षरता (Technology Literacy)

3. जीवन कौशल (FLIPS)

- लचीलापन (Flexibility)
- नेतृत्व क्षमता (Leadership)
- पहल करने की क्षमता (Initiative)
- उत्पादकता (Productivity)
- सामाजिक कौशल (Social skills)

3.1. सीखने के कौशलः सीखने के कौशल इन्हें 4C नाम से भी संबोधित किया जाता है। यह व्यावहारिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक दक्षताएं हैं जो ज्ञान प्राप्त करने, उसे समझने उसका विश्लेषण करने और आत्मसात करने में छात्रों की सहायता करते हैं। इन्हें चार मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, संचार और सहयोग। ये चारों कौशल एक दूसरे पर निर्भर हैं और मिलकर छात्र के बौद्धिक, सामाजिक तथा व्यक्तित्व विकास को पूरा करते हैं।

3.1.1. आलोचनात्मक सोचः आलोचनात्मक सोच किसी भी प्रश्न,विषय, विचार, मुद्दा या समस्या पर गहराई से मनन करने उसे समझने और उसका तार्किक एवं सूक्ष्म विश्लेषण करने में सहायता करती है। यह कौशल छात्रों को प्रश्न पूछने, विश्लेषण एवं वर्गीकरण करने, तुलना करने, कारण–परिणाम समझने और स्वतंत्र रूप से विचार बनाने के लिए सक्षम बनाती है। जब बच्चे "क्यों", "कैसे" और "क्या" जैसे प्रश्न पूछते हैं, तो वे न केवल ज्ञान को समझते हैं, बल्कि अपनी चिंतन को और भी मजबूत ,परिपक्व और तार्किक बनाते हैं। यह कौशल निर्णय लेने, राय बनाने और तर्क प्रस्तुत करने की आधारशिला है।

3.1.2. रचनात्मकताः यह सीखने का वह कौशल है जो बच्चों को नई सोच, नए विचारों, नए दृष्टिकोणों को अपनाने और नवाचार के लिए प्रेरित करता है। रचनात्मक कौशल के कारण छात्र अपनी कल्पना और अनुभवों के माध्यम से किसी विषय को नए रूप में समझते और प्रस्तुत करते हैं।

3.1.3. सहयोगः यह सीखने का सबसे अधिक जटिल और सामाजिक कौशल है, जिसमें छात्र समूह में मिलकर सीखते हैं, कार्य करते हैं और साझा समझ से लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक–दूसरे की योग्यताओं का उपयोग करते हैं। सहयोग के माध्यम से छात्र सामूहिक कार्य, विचारों का आदान का प्रदान, समस्या का समाधान, निर्णय लेना और मतभेदों को सुलझाना सीखते हैं।

3.1.4. संचारः यह सीखने का एक अत्यंत आवश्यक कौशल है, जिसके माध्यम से छात्र अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को प्रभावी ढंग से

अभिव्यक्त कर पाते हैं। संचार शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों प्रकार का होता है। प्रभावी संचार के द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

3.2. साक्षरता कौशलः साक्षरता कौशल को IMT कौशल भी कहा जाता है। डिजिटल युग में IMT कौशल छात्रों को केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उन्हें मीडिया और प्रौद्योगिकी द्वारा ज्ञान प्राप्त करने, समझने, उसका तार्किक विश्लेषण करने और उसका सृजन करने में सक्षम बनाते हैं।

3.2.1. सूचना साक्षरताः सोशल मीडिया और डिजिटल युग में छात्रों के लिए सूचना साक्षरता कौशल आवश्यक कौशल है। यह ऑनलाइन उपलब्ध जानकारियों और सूचनाओं को पहचानने, उन्हें समझने उनका विश्लेषण करने तथा उनका सही मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करता है और छात्रों को गलत सूचनाओं और भ्रम से बचाता है।

3.2.2. मीडिया साक्षरताः आज मीडिया के प्रकार अत्यंत विविध और नित परिवर्तित होते जा रहे हैं। मीडिया साक्षरता के माध्यम से छात्र आज के लोकतांत्रिक मूल्यों वाले युग में मीडिया की भूमिका, आवश्यकता, महत्व, प्रभाव और उसकी विश्वसनीयता आदि को समझते हैं। मीडिया साक्षरता छात्रों को संचार की मूल संरचना को समझने की दक्षता प्रदान करती है, जिससे छात्र प्रत्येक मीडिया संदेशों की सत्यता, सीमा, प्रभाव और प्रकृति को पहचान पाते हैं।

3.2.3. प्रौद्योगिकी साक्षरताः वर्तमान में हम सब एक ऐसे तकनीकी क्रांति के दौर से गुजर रहे हैं, जिसमें कम समय ही में बड़े–बड़े परिवर्तन हो रहे हैं। प्रौद्योगिकी के इस दौर में प्रौद्योगिकी साक्षरता, तकनीकी उपकरणों और उसके कार्य प्रणाली को सोचने, समझने और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने की दक्षता प्रदान करती है। प्रौद्योगिकी साक्षरता छात्रों में यह समझ विकसित होती है कि कौन–सी तकनीकी कैसे और कैसा कार्य करती है। प्रौद्योगिकी साक्षरता छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करती है।

3.3. जीवन कौशलः जीवन कौशल को FLIPS कौशल नाम से भी जाना जाता है। जीवन कौशल वह आवश्यक क्षमताएं हैं जो छात्रों को उनके दैनिक जीवन में आने वाली बाधाओं,समस्याओं और कठिनाइयों का आत्मविश्वास और समझदारी से सामना करने और उनका प्रभावी ढंग से समाधान करने योग्य बनाती हैं। यह क्षमताएं हमारे आज के छात्रों को भविष्य का आदर्श नागरिक और सामाजिक प्राणी बनती हैं।

3.3.1. लचीलापनः लचीलापन वह जीवन कौशल है जो छात्रों को परिवर्तित होती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलने, आवश्यकता अनुसार अपनी बनाई गई योजनाओं में परिवर्तन करने और एक समय में एक से अधिक कार्यों को प्रभावी और उत्तम ढंग से क्रियान्वित करने कि कला विकसित करता है। इस कौशल के माध्यम से छात्रों में आत्मविश्वास, सकारात्मक और विस्तृत सोच, सहनशीलता, आशावादी दृष्टिकोण और धैर्य के साथ परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता विकसित होती है।

3.3.2. नेतृत्व क्षमताः नेतृत्व क्षमता वह जीवन कौशल है जिसके माध्यम से छात्रों में संयुक्त लक्ष्य की प्राप्ति में दूसरों को मार्गदर्शन करने, उन्हें प्रेरित करने और

सभी के सहयोग के साथ लक्ष्य को प्राप्त करने की योग्यता विकसित होती है। प्रभावी नेतृत्व क्षमता छात्रों को पहल करने, दूरगामी परिणामों के प्रति चिंतन करने मूल्यांकन करने और टीम को सफल परिणामों की ओर ले जाने में सक्षम बनाता है।

3.3.3. पहल करने की क्षमता: यह जीवन कौशल छात्रों में पहल करने की क्षमता को विकसित करता है। इसके माध्यम से छात्र बिना किसी निर्देश के जिम्मेदारी लेने, उन्मुक्त होकर कार्य को आरंभ करने और सक्रिय रूप से कार्य को निष्पादित करने की योग्यता को विकसित करते हैं। पहल करने की क्षमता छात्रों में सक्रियता और जिम्मेदारी जैसे गुणों को विकसित करती है।

3.3.4. उत्पादकता: यह जीवन कौशल व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता का एक प्रमुख आधार है, क्योंकि इसके द्वारा छात्र समय का उचित प्रबंधन कर कार्यों को प्राथमिकता के क्रमानुसार पूरा करना सीखते हैं। इस कौशल के माध्यम से छात्रों में तनाव मुक्त रहते हुए कार्य स्थल की कुशलता और मनोबल के साथ कार्य संस्कृति को बेहतर बनाने के गुण विकसित होते हैं

3.3.5. सामाजिक कौशल: सामाजिक कौशल वह जीवन कौशल है जो छात्रों में प्रभावपूर्ण संचार, व्यवहार और सहयोग के माध्यम से समाज के अन्य लोगों के साथ जुड़ना सीखते हैं। में कौशल के माध्यम से छात्रों में सम्मान विश्वास उत्तरदायित्व सामूहिक भावना सहयोग आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है। परिवर्तित होते सामाजिक और डिजिटल परिवेश में, सामाजिक कौशल छात्रों को स्वस्थ संबंध बनाने, समूह में कार्य करने और भविष्य के लिए एक आदर्श व्यावसायिक जीवन के लिए तैयार करते हैं।

4. 21वीं सदी के कौशल और नई शिक्षा नीति 2020: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा तीन आवश्यक वैश्विक चुनौतियों को स्वीकार किया गया है, जिनके लिए शैक्षिक प्रतिक्रिया में कौशल केंद्रित शिक्षा को महत्व दिया गया है. प्रथम, उभरती तकनीकी जैसे कि मशीन लर्निंग, बिग डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भविष्य के कार्य करने वालों में अनुकूलनशीलता की मांग करती है. द्वितीय, जलवायु परिवर्तन, कम होते प्राकृतिक संसाधन, प्रदूषण से उत्पन्न पर्यावरण की चुनौतियों, दुनिया में खाद्य, पानी और ऊर्जा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नवीनतम और स्थाई समाधानों की मांग करती हैं और तृतीय, नई प्रकार की बीमारियों, महामारियों और संक्रामक रोगों आदि से बढ़ते खतरों के कारण उत्तम चिकित्सकीय अनुसंधान और आर्थिक सामर्थ्य की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करती है. इन चुनौतियों के लिए तैयारी के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शुरुआती कक्षाओं से ही 21वीं सदी के कौशल केंद्रित शिक्षा को प्राथमिकता देती है और अलग–अलग विषयों के दृष्टिकोण का लाभ उठाते हुए है सैद्धांतिक कक्षाओं के ज्ञान को व्यावहारिक प्रयोग के साथ जोड़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार आज के विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, संचार कौशल, सहयोग–भावना, डिजिटल साक्षरता, नवाचार, समस्या

समाधान, नेतृत्व क्षमता और आत्मनिर्भरता जैसी दक्षताओं का विकसित होना आवश्यक है। यही कारण है कि यह नीति बहुविषयक शिक्षा, अनुभवजन्य अधिगम, प्रोजेक्ट आधारित सीखने और कौशल–आधारित मूल्यांकन पर विशेष बल देती है।

नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और अपने विचार व्यक्त करने के अवसर प्रदान किए गए हैं, जिससे छात्रों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है और वे बदलती तकनीकी युग, वैश्विक प्रतिस्पर्धा तथा सामाजिक और व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को सक्षम बनाते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को जीवन से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को 21वीं सदी के सक्षम, कुशल, संवेदनशील, आत्मविश्वासी, सक्रिय, जिम्मेदार और आदर्श नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली को मजबूती और नई दिशा प्रदान करती हैं।

संदर्भ

1. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 www.education.govt.in
2. तुलस्यान, अर्पण (2025) "स्कूलों में कौशल शिक्षा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020के लागू होने से बनते रास्ते" https://share.google/37gLG0RwQLth8I0Ta
3. कुमार, मुकेश (2025)" NEP 2020 और 21वीं सदी के लिए जरूरी 6 C स्किल्स" https://www.mukeshsir.com/2025/07/nep-2020-aur-21vi-sadi-6c.html?m=1
4. "एन ई पी 2020 और कौशल विकास छात्रों में 21वीं सदी के कौशल को प्रोत्साहित करना" https://share.google/9Zz1ArgtjqywkgJOo
5. https://share.google/78a90Ml1P2UB60sBQ
6. Barruga, J. (2021). Life skills (FLIPS) [PDF]. Scribd. https://www.scribd.com/document
7. British Council Greece,जीवन कौशल क्या है और इन्हें सीखना क्यों आवश्यक है? https://share.google/puMd8I18iAOUl0VWC
8. Doubtful LearningK12, साक्षरता कौशल क्या है? https://share.google/fBuvdkmXkz9XGjYnF
9. Twinklअधिगम कौशल क्या है? https://share.google/OJSuMo4tBgTGyGQkx
10. Team iCEV (2024). 21वीं सदी के कौशल क्या है? https://share.google/7FZaYJKz6hMGcR9HV
11. Vangani, N., Makwana, H., Radia, P., ,oa Nanavati, (2023). "विकास को गति देने के लिए संरेखित 21वीं सदी के कौशल की भूमिका"

इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एप्लाइड साइंस एंड इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी (IJRASET). https://share.google/wwsnMok5tVxuiN61E

12. बकल,जेना, Panorama Education, 21वीं सदी के कौशललों लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका https://www.panoramaed.com/blog/comprehensive-guide-21st-century-skills
13. मिश्रा, नंदिता एवं ऐथल, पी. एस. (2023)। प्राचीन भारतीय शिक्षा आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उसकी प्रासंगिकता एवं महत्त्व। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ केस स्टडीज इन बिजनेस, आईटी एवं एजुकेशन (IJCSBE), खंड 7, अंक 2, पृष्ठ 239–246A श्रीनिवास पब्लिकेशन।
14. भार्गव, सुनीता एवं अग्रवाल, अंजना. (2025)। भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकसित भारत। द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एमर्जिंग रिसर्च (TIJER), खंड 12, अंक 8, अगस्त 2025। ISSN 2349–9249।